कला के आयाम

पोट्रेट – अभिव्यक्ति की एक शैली

शेफाली जैन

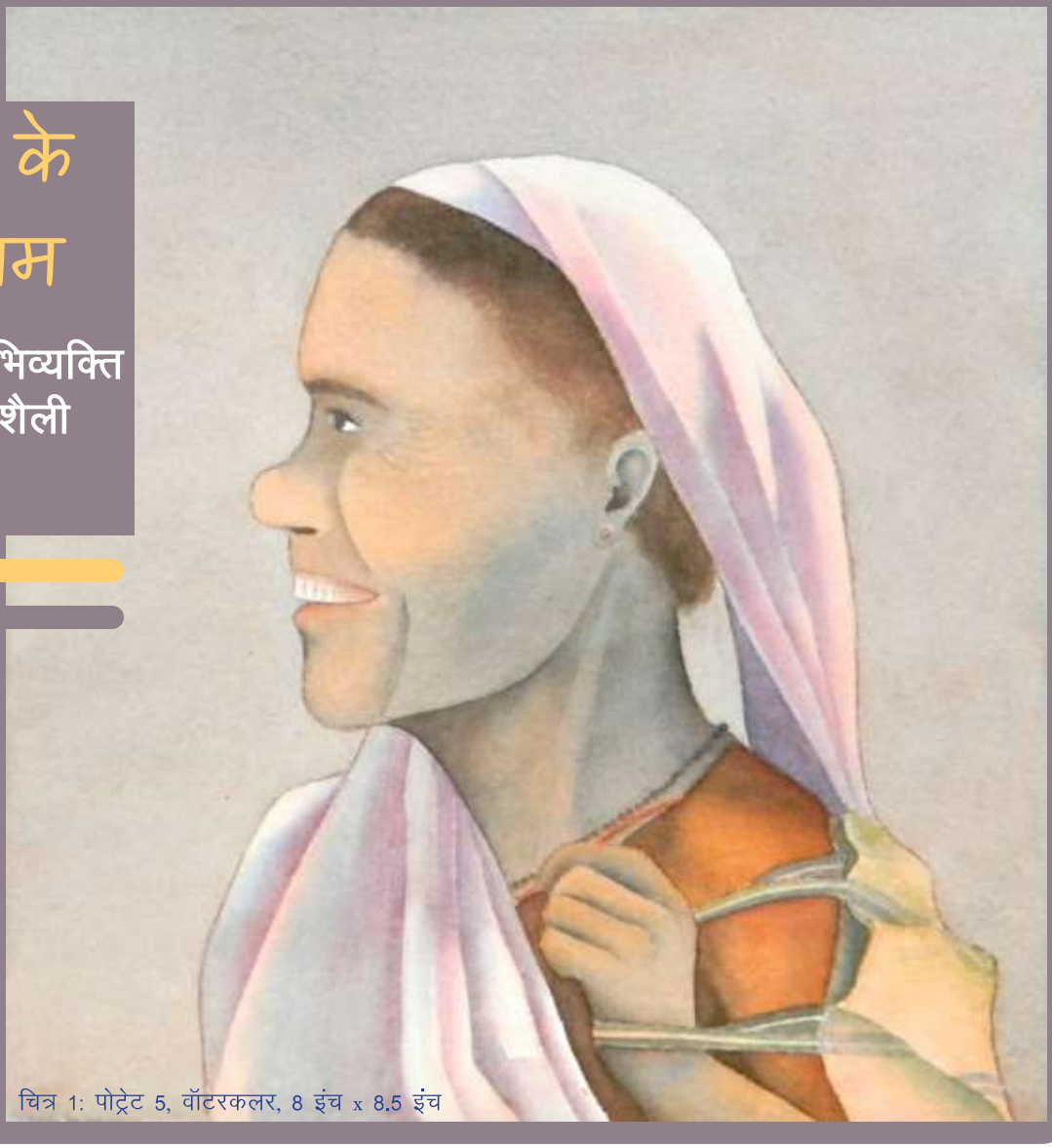

चित्र 1: पोट्रेट 5, वॉटरकलर, 8 इंच x 8.5 इंच

मैं कलाकार राजू पटेल से पहली बार बड़ौदा में मिली। राजू भाई की तरह मैंने भी कला की पढ़ाई एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा से ही की है। उस दौरान, खासकर कला की पढ़ाई खतम होने के बाद, मैं अपनी कला की दिशा और विषयवस्तु को लेकर कुछ सवालों से जूझ रही थी। राजू भाई के आर्टवर्क उस समय मुझ पर एक गहरी छाप छोड़ गए थे। तब वे कला के माध्यम से विकलांगता (disability) पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। खैर, वह ठहरी तब की बात। फिर बड़ौदा छूट गया, पर बड़ौदा में बने दोस्त नहीं छूटे।

हम लोग अक्सर सोशल मीडिया पर एक-दूसरे के काम को फॉलो करते हैं। कुछ समय पहले मैं फिर से राजू भाई के आर्टवर्क गौर-से देखने लगी। उस वक्त वे कुछ वॉटरकलर पोट्रेट बना रहे थे। इन पोट्रेट के बारे में उत्सुकता तो थी ही और काफी साल से राजू भाई से बात भी नहीं हुई थी। इसलिए मैंने उनसे फोन पर बातचीत करने की ठान ली। बातचीत के दौरान मैंने उनसे उनके नए पोट्रेट के बारे में पूछा। "कौन हैं ये लोग?" "आप इनके पोट्रेट क्यों बना रहे हैं?" जैसी बातों के अलावा भी बहुत सारी बातें हुईं। उनसे हुई बातों को मैं अपने विचारों के साथ तुमसे साझा कर रही हूँ। पर इससे पहले मैं तुम्हें पोट्रेट के इतिहास के बारे में कुछ बताना चाहती हूँ।

बदलती हुई कला

पोट्रेट एक तरह की चित्रशैली है जिसमें किसी व्यक्ति-विशेष की पहचान कला के माध्यम से प्रतिबिम्बित की जाती है। ऐसा मूर्तिकला, चित्रकला, फोटोग्राफी या डिजिटल माध्यम से किया जा सकता है। उन्नीसवीं सदी के पहले पोट्रेट ज़्यादातर धनवान लोगों, ऊँचे ओहदे वालों या फिर किसी जानी-मानी हस्ती के ही बनाए जाते थे। मसलन मुगल लघुचित्र शैली में अकबर, जहाँगीर जैसे बादशाहों के पोट्रेट। या फिर तानसेन जैसे महान संगीतज्ञ का पोट्रेट और यूनानी मूर्तिकला में जाने-माने दार्शनिक सुकरात का पोट्रेट। इसके कई कारण थे। चूँकि ये पोट्रेट राजा या फिर सेठ के लिए काम करने वाले कलाकार बनाते थे, इसलिए उन्हें वही बनाना पड़ता था जो मालिक को पसन्द हो। तब चित्रकारी की सामग्री भी काफी महँगी होती थी और आम लोगों के पास अपना पोट्रेट बनवाने के लिए पैसे नहीं होते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में जब कलाकारों ने स्वतंत्र रूप से काम करना शुरू किया, तब आम लोगों के पोट्रेट बनने लगे। मैरी कैसट ने अपने आसपास की महिलाओं और बच्चों के पोट्रेट बनाने शुरू किए। उन्होंने अखबार पढ़ती महिलाओं, बच्चों को नहलाती महिलाओं वगैरह के पोट्रेट बनाए। बीसवीं शताब्दी के ऐसे ही एक कलाकार हैं भूपेन खक्खर। उन्होंने अपने दोस्तों के, गली के टेलर के, घड़ीसाज़ के पोट्रेट बनाने का निर्णय लिया। आज तो, खासकर फोटोग्राफी के आविष्कार के बाद, आम लोगों को भी अपनी पोट्रेट खिंचवाने का ज़रिया मिल गया है। मोबाइल फोन आने से 'सेल्फी' या फिर सेल्फ-पोट्रेट काफी आम बात हो गई है। लेकिन कुछ और भी मसले हैं जिनके कारण आज भी आम लोगों को पोट्रेट का हकदार नहीं समझा जाता। पहले सेठ-साहूकार कला के मालिक थे, तब उनकी पसन्द से पोट्रेट का विषय चुना जाता था। आजकल उनकी जगह कला वीथियों, संग्रहालयों, संस्थाओं ने ले ली है। ये भी कला के विषय के चुनाव पर हावी हो सकती हैं। हालाँकि आसान नहीं है, लेकिन फिर भी आज कलाकार का स्वतंत्र तरीके से काम कर पाना और अपनी कला की विषयवस्तु खुद तय कर पाना पहले से तो ज़्यादा मुमकिन है।

राजू भाई के पोट्रेट के किरदार

बातचीत के दौरान राजू भाई ने बताया कि उनके पोट्रेट में जो लोग हैं वे उनके गाँव के जान-पहचान वाले मज़दूर आदिवासी हैं। जैसे कि किसान, बँधुआ मज़दूर, रेड़ी वाले, सब्ज़ी वाले, ईंट की भट्टी पर काम करने वाले, दातुन बेचने वाले, बाँस की टोकरियाँ बनाने वाले, करतब दिखाने वाले वगैरह। तो ज़ाहिर है कि राजू भाई किसी सेठ-साहूकार या

चित्र 2: एग्रीकल्चर टूल सेलर

चित्र 3: अनटाइटल्ड 1, वॉटरकलर, 26 इंच x 40 इंच

फिर बड़ी हस्ती का पोट्रेट नहीं बनाना चाहते। वे आम लोगों में दिलचस्पी रखते हैं। वे लोग, जिनसे वे परिचित हैं, जो उनके समुदाय से हैं। इनकी दिनचर्या, मेहनत और चुनौतियों से राजू भाई अच्छी तरह से वाकिफ हैं और वे चाहते हैं कि इन लोगों की विस्तृत और संवेदनशील पहचान को वे पोट्रेट में ढालें और दूसरों तक पहुँचाएँ।

चित्र 4: खुशियों का विक्रेता

राजू भाई ने यह भी बताया कि उन्हें फोटोग्राफी का शौक है। वे जब भी अपने गाँव जाते हैं तो वहाँ के रोज़मर्रा के जीवन की फोटोग्राफी करते हैं। उनके इंस्टाग्राम अकाउंट पर मैंने ऐसे बहुत-से फोटोग्राफ देखे – जैसे कि गाँव के हाट में सामान बेचते लोग (चित्र 4), धान कूटती महिलाएँ, बेंत की चटाई बनाती छोटी लड़की, पत्थर की खलनी-कूटा बनाता हुआ कारीगर, शहद का छत्ता निकालता हुआ आदमी,

पानी के नल पर औरतों की कतार वगैरह। इन फोटोग्राफ में गाँव के लोगों और उनके कामकाज और उनसे जुड़े औज़ारों की झलक मिलती है। औज़ार और मशीनें इनकी तस्वीरों में काफी अहम जगह रखते हैं – मज़दूर के औज़ार से लदी साइकिल, मज़दूरों से लदा ट्रैक्टर, खेत जोतने की मशीन, खेती के औज़ार बेचती महिला (चित्र 2)। लोगों के अलावा फोटोग्राफ में गाँव के दूसरे रहवासी भी हैं। जैसे कि मकड़ी, ततैया, बकरियाँ, चूज़े, मेंढक, गिरगिट और चींटियाँ! गाँव के लोगों का इनसे एक गहरा रिश्ता है। उनकी ज़िन्दगियाँ एक-दूसरे से बँधी हैं, कुछ काम के ज़रिए और कुछ प्रेम के सहारे (चित्र 3 व 5)। ये फोटोग्राफ्स बताते हैं कि राजू भाई की नज़र में कोई भी छोटा या मामूली नहीं। सब खास हैं।

राजू भाई की पहल

राजू भाई अक्सर इन फोटोग्राफ्स से पोट्रेट बनाते हैं। उनके पोट्रेट के किरदार लोग तो हैं ही, पर औज़ार और जीव-जन्तु भी हैं। कभी-कभी पोट्रेट में इन किरदारों का परस्पर जीवन भी झलकता है। जैसे कि चित्र 3 में एक लड़की अपनी बकरी को गोद में लिए हुए है। ध्यान दो कि लड़की का हाथ और बकरी का शरीर लगभग एक-दूसरे में घुल-मिल गए हैं। अगर तुमने बकरी के बच्चे को उठाया है तो शायद अपने हाथ को उसके बालों में प्यार-से घुलता महसूस किया होगा!

अब चित्र 6 देखो। इसमें एक औरत अपनी तगाड़ी लिए शायद मज़दूरी के लिए चल पड़ी है। और चित्र 1 में एक औरत अपना थैला कन्धे पर लटकाए शायद हाट बाज़ार की तरफ निकली है। एक और बात है इन सब चित्रों में। ऐसा लगता है कि ये सब लोग कड़ी धूप में खड़े हैं। चित्रों के सारे रंग जैसे कड़क धूप में फीके पड़ गए हों। इस चुँधियाती रौशनी के कारण किरदारों के आसपास एक सन्नाटा-सा महसूस होता है। ठीक वैसा जैसा हमें गर्मियों की तेज़ दोपहर में महसूस होता है। ऐसा लगता है जैसे यह सन्नाटा हमारा ध्यान किरदारों पर बनाए रखने में मदद करता है।

राजू भाई ने कुछ समय पहले आउट डोर प्रैक्टिस (खुले में कलाभ्यास) नाम की एक नई पहल शुरू की। वे हर रविवार अपने कलाकार दोस्तों के साथ बड़ौदा के आसपास के गाँवों में जाकर चित्र बनाते हैं। इस पहल का मकसद था चित्रकार और चित्रकारी को बन्द कमरे से निकालकर रोज़मर्रा के जीवन में ले जाना। चित्रकला अक्सर कलाकार के स्टूडियो या फिर कला वीथियों में बँधकर रह जाती है। हम-तुम में से कुछ ही लोग इन जगहों के बारे में जानते हैं या फिर कलाकृतियाँ देखने वहाँ जा पाते हैं। राजू भाई का कहना है कि ऐसे में आम लोग ना ही कला के मुख्य किरदार बन पाते हैं और ना ही उसके दर्शक। आउटडोर प्रैक्टिस के ज़रिए राजू भाई और उनके दोस्त कला को आम लोगों के बीच ले जाते हैं। जो लोग रोज़ की मेहनत और काम से वक्त नहीं निकाल पाते, वो भी अपनी मज़दूरी के बीच में से आकर चित्र बनते देख पाते

चित्र 5: रेस्क्यू

चित्र 6: अनटाइटल्ड 3, वॉटरकलर, 26 इंच x 40 इंच

हैं। इससे उनके और कलाकार के बीच बातचीत की सम्भावना बनी रहती है। साथ ही एक-दूसरे की परिस्थिति और पृष्ठभूमि को जानने, समझने और चित्रित करने की कोशिश भी जारी रहती है।

कला की दिशा

इस तरह से राजू भाई ने हमेशा से ही अपनी कला की दिशा खुद तय की है। वे अपनी कला के विषय और उसके दर्शकों के बारे में काफी सोचते हैं। राजू भाई को यकीन है कि कला आम लोगों के बारे में है और उसे आम लोगों के बीच रहना चाहिए। अपनी इस सोच को वे ऊपर बताए अलग-अलग तरीके अपनाकर आज़माते हैं। कला की दिशा का सवाल बड़ा ही अहम सवाल है। हर सदी में राजू भाई जैसे कुछ कलाकारों ने अपनी सोच पर भरोसा और अमल करके कला की दिशाएँ और उसके आयाम बदले हैं।

क्या तुमने कभी सोचा है कि तुम अपनी कला को क्या दिशा देना चाहोगे? या ऐसा कौन-सा विषय या सवाल हैं जिन्हें तुम कला के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हो? शायद तुम भी अपनी सोच और अपनी कलाकृतियों से कला के विषयों, उसकी दिशा, उसके आयामों का दायरा और विस्तृत व गहरा बना पाओ! चलो, एक कोशिश करके देखते हैं। तुम अपने मोहल्ले के अलग-अलग पेशे के लोगों जैसे कि मोची, प्रेस वाले, सफाई कर्मचारी, सब्ज़ी बेचने वाली महिला, डाकिया वगैरह के पोट्रेट बनाओ। इसके लिए शायद तुम्हें उनसे समय लेना पड़े क्योंकि वे काफी व्यस्त रहते हैं। पर बातचीत करके ज़रूर देखना, अगर उनके पास समय नहीं भी हुआ तो तुम्हारे नए दोस्त तो बन ही जाएँगे! इन पोट्रेट का एक एल्बम बनाकर तुम चकमक को भेज सकते हो।

सभी पेंटिंग्स व फोटो: राजू पटेल